श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

श्री बाल गोपाल अष्टकम्

श्रीमद् भागवत का यह सार
भगवद् भक्ति ही आधार

श्री बाल गोपाल अष्टकम्

तीरपयोनिधि वृक्षनिवासं(म्),
हास्य कटाक्षय वं(व्)शीनि नादं(म्)।
श्यामल सुन्दर नित्य विलासं(म्),
तं(म्) प्रणमामि च बालगोपालम् ॥1॥

गोधन पालक गोपकुमारं(ञ्),
चन्दन चर्चित कुङ्कुमभारं(म्)।
नील कलेवर शोभित हारं(न्),
तं(म्) प्रणमामि च बालगोपालम् ॥2॥

गो गिरि धारण मेदिनि त्राणं(ङ्),
काम्य मनोरथ सिद्धि प्रदानं(म्)।
श्री यदुनन्दन हर मे पापं(न्),
तं(म्) प्रणमामि च बालगोपालं(म्) ॥3॥

श्री मधुसूदन बाल्य चरित्रं(ङ्),
काम्य मनोहर वेश विचित्रं(म्)।
यशोदानन्दन सुन्दर कृष्णं(न्),
तं(म्) प्रणमामि च बालगोपालम् ॥4॥

केलि कुतुहलि छन्न विवादं(ङ्),
केशव यामिनी पतित निनादं(म्)।
मल्ल निपातित मृष्टिक घातं(न्),
तं(म्) प्रणमामि च बालगोपालम् ॥5॥

कं(व्)स निशूदन केशि निनाशं(न्),
ताल फलेषुच धेनुका नाशं(म्)।
देवकी नन्दन सुन्दर कृष्णं(न्),
तं(म्) प्रणमामि च बालगोपालम् ॥6॥

उज्ज्वल पङ्कज बाहु मृणालं(म्),
लक्ष्मी सरस्वती सेवित पादं(म्)।
श्री यदुनन्दन हर मे पापं(न्),
तं(म्) प्रणमामि च बालगोपालम् ॥7॥

यादव माधव केशव शौरे,
श्रीधर सुन्दर कृष्ण मुरारे।
तारय तारय हर मे पापं(न्),
तं(म्) प्रणमामि न बालगोपालम् ॥8॥

॥ इति श्री बालगोपालाष्टकम् सम्पूर्णं ॥